श्री रामचरित मानस में निहित पर्यावरणीय तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

***Dr.Rakhi Sharma ***
Reader/Associate Professor, B.C.G.Shiksha Mahavidyalaya,Dewas(M.P.)

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन में श्री रामचरित मानस में निहित पर्यावरणीय तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में साहित्यिक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध के लिए शोधकार्य के क्षेत्र से संबंधित विभिन्न पुस्तकों का अध्ययन किया गया तुलसीदास जी कृत श्री रामचरित मानस, उपाध्याय राधावल्लभ – पर्यावरणशिक्षा । प्रदत्तों का विश्लेषण विषय–वस्तु विश्लेषण के आधार पर किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित निष्कर्ष पाए गए। पर्यावरण को मानव का आवश्यक तत्व मानते हुए मानव व्यक्तित्व विकास में सहायक बताया है मानव प्रकृति , रीति रिवाज मानवीय परम्पराओं उत्सव, समाज आदि से अवगत कराया गया है। रामचरित मानस में पर्यावरण के प्रकार प्राकृतिक पर्यावरण से संबंधित 8 दोहे, 45 चौपाईया, एक छंद निहित है। जिसमें प्रकृति के विभिन्न तत्वों एवं रूपों में वर्णन किया गया है। सांस्कृतिक पर्यावरण में धर्म एवं संस्कृति के आधार पर मानवीय सामंजस्य स्थापित कर उद्योग, कला एवं भाषा संस्कारों को सम्मिलित किया गया। रामचरित मानस में पर्यावरण की अलौकिक पहचान प्रस्तुत कर सम्पूर्ण मानव को इसकी उपयोगिता से अवगत कराते हुए पर्यावरण संरक्षण की प्राथमिकता को समझाया गया।

प्रस्तावना

वैदिक काल का मानव प्रकृति के प्रति संवेदनशील तो था ही, साथ ही उसका सौंदर्य बोध भी विकसित था। उसी धरती का सौंदर्य इतना प्रिय था कि वह उसे अनंत काल तक वैसा ही रखने की कामना करता रहा है। संसार को देखने के उपरांत भी पृथ्वी के रहस्य एवं आश्चर्य को व्यक्ति द्वारा समझने की जिज्ञासा शांत नहीं होती है। सृष्टि की उत्पत्ति के बाद जीवधारी परस्पर एक दूसरे पर आश्रित होते हुए एक सूत्र में बंधते चले गए। किंतु समय बीतने के साथ अभी जीव धारियों में लोक कल्याण का भाव समाप्त हो गया। प्रकृति और पर्यावरण का दोहन होना प्रारंभ कर दिया। पर्यावरण से जो कुछ भी मानव के चारों और विद्यमान है तथा उसके रहन सहन, दशा मानसिक क्षमताओं को प्रभावित करता है, विश्व के सभी मुख्य धर्म पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षा हेतु अति संवेदनशील रहे हैं। इन्हीं धर्मों में हिंदू धर्म भी है। हिंदू धर्म के प्राचीन एवं पवित्र ग्रंथों में प्रकृति से गहरा जुड़ाव मिलता है। धार्मिक ग्रंथों में रामचरितमानस में पर्यावरण संरक्षण के बारे में जानकारियां दी गई है ।प्रस्तुत शोध पत्र में रामचरित मानस की चौपाईयाँ सम्मिलित की गयी हैं ।

उद्देश्य :

अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं –

1. श्री रामचरितमानस में निहित पर्यावरणीय संकल्पनाओं का अध्ययन करना।

प्रस्तुत अध्ययन में साहित्य सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध के लिए शोध कार्य के क्षेत्र से संबंधित विभिन्न पुस्तकों का अध्ययन किया गया– तुलसीदास जी कृत श्रीरामचरितमानस। उपाध्याय राधा वल्लभ – पर्यावरण शिक्षा, सिंह उमा. पर्यावरण शिक्षा पद्धति का विश्लेषण विषय वस्तु विश्लेषण के आधार पर किया गया।

श्रीरामचरितमानस में निहित पर्यावरणीय तत्व :

गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्री रामचरितमानस की रचना की है इसे साथ खंडों में विभक्त किया गया है। यह ग्रंथ दोहे चौपाई की शैली में परिनिष्ठित अवधी भाषा में लिखा गया है। इस ग्रंथ में पर्यावरण को ईश्वर से जोड़ा गया है।

चौपाई– नव पल्लव फल सुमन सुहाए। निज संपति सुर रूख लजाए।
चातक कोकिल कीर चकोरा। कूजत विहग नटत कल मोरा।। (बालकाण्ड/226/3)

अर्थ– (श्री राम जी ने राजा जनक का सुन्दर बाग देखा) नये पत्तों फलों और फुलों से युक्त सुन्दर वृक्ष अपनी सम्पति से कल्पवृक्ष भी लजा रहे है पपीहे, कोयल, तोते चकोर आदि पक्षी मीठी बोली बोल रहे है और मोर सुन्दर नृत्य कर रहे है।

चौपाई – रामचरित चिंतामनि चारू। संत सुमति तिय सुमग सिंगारू जग मंगल गुनग्राम राम के ।
दानि मुकुति धन धरम धान को।
सदगुरू ज्ञान विराग जोग के । विबुध बेद भव भीम रोग के जननी जनक सीय राम प्रेम के । बीज सफल व्रत धरम नेम को। (बालकाण्ड 31 1.2)

अर्थ– श्रीरामचन्द्र जी का चरित्र सुन्दर चिन्तामणि है, और संतो की सुबुद्धिरूपी स्त्री का सुन्दर श्रंगार है। श्री राम जी के गुण समूह जगत का कल्याण करने वाले और मुक्ति धन, और परमधाम के देने वाले ही ज्ञान वैराग्य और योग के लिए सदगुरू है और संसार रूपी भयंकर रोग का नाश करने के लिए देवताओं के वैद्य अश्विनी कुमार के समान है। ये सीता–राम जी के प्रेम के उत्पन्न करने के लिए माता–पिता है और सम्पूर्ण व्रत, धर्म और नियमों के बीज है।

चौपाई – राम वियोग बिकल सब ठाढे । जहाँ तँह मनहूँचित्र लिखि काढे ।
नगरू सफल बनु गहनर भारी। खग मृगबिपुल सकल नर नारी । (अयोध्या काण्ड/83/1)

अर्थ – श्री राम जी के वियोग में सभी व्याकुल हुए जहाँ – तहाँ (ऐसे चुपचाप होकर) खडे है, मानों तस्वीरों में लिखकर बनाये हुए है। नगर मानों फलों से परिपूर्ण बड़ा भारी सघन वन था। नगर निवासी सभी स्त्री पुरूष एवं बहुत से पशु पक्षी थे।

चौपाई – ओरइ कथा अनेक प्रसंगा । तेइ सुकपिक बहुबरन बिहंगा। (बालकाण्ड/38/8)

अर्थ – रामचरित मानस में और भी जो अनेक प्रसंगों की कथाएँ हे वे ही इससे तोतें, कोयल आदि रंग–बिरंगे पक्षी है।

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित निष्कर्ष पाए गए –

1. विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तावित पर्यावरण संकल्पनाओं को ही लिया गया है। जिसमें पर्यावरण को मानव का आवश्यक तत्व मानते हुए मानव व्यक्तित्व विकास में सहायक बताया है।
2. श्री रामचरितमानस में अंतर्निहित पर्यावरण संकल्पना ओं के द्वारा मानव प्रकृति, रीति रिवाज, मानवीय परंपराओं, उत्सव, समाजवादी से अवगत कराया गया है।

3. श्री रामचरितमानस में पर्यावरण के प्रकार प्राकृतिक पर्यावरण से संबंधित 8 दोहे, 45 चौपाइयां, एक छंद निहित है। जिसमें प्रकृति के विभिन्न तत्वों, विविध रूपों में वर्णित किया गया है।
4. सामाजिक पर्यावरण में 94 चौपाइयों एवं 15 दोहे व एक छंद है, जिनमें पारिवारिक संबंध व सामाजिक संबंध प्रेरणा स्त्रोत है, जो संपूर्ण मानव जाति को रीति रिवाज परंपराएं, धार्मिक त्योहार व उत्सव के द्वारा परस्पर सामाजिक संबंध विकसित करने की प्रेरणा देते हैं।
5. सांस्कृतिक पर्यावरण में धर्म एवं संस्कृति के आधार पर मानवीय सामंजस्य की स्थापना के साथ–साथ उद्योग कला भाषा संस्कारों को सम्मिलित कर 24 चौपाई एवं 6 दोहो के साथ मानव का सांस्कृतिक पर्यावरण को उजागर किया।
6. श्री रामचरितमानस में पर्यावरण की अलौकिक पहचान प्रस्तुत कर संपूर्ण मानव को इसकी उपयोगिता से अवगत कराने हेतु पर्यावरण संरक्षण की प्राथमिकता को समझाया गया है।

शैक्षिक निहितार्थ

श्री रामचरितमानस में भगवान श्री राम चरण कमलों से प्रकृति के विभिन्न तत्व, वन, मार्ग पशु पक्षी पृथ्वी धन्य होने के साथ–साथ उनको देखकर सफल जन्म बनाने लगे। इस पवित्र ग्रंथ के प्रत्येक दोहे, चौपाइयां मानव की कोई ना कोई पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा अवश्य प्रदान करते हैं। जिससे उनके व्यवहार में परिवर्तन आएगा और वह इसकी वर्तमान में उपयोगिता सिद्ध कर सकेंगे। इस ग्रंथ का विश्व भर में स्वागत किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- बारोलिया ए. (2002) पर्यावरण शिक्षा के नये आयाम ,आगरा ,राधा प्रकाशन मंदिर।
- जैन गरिमा (2007) पर्यावरण अध्ययन सामाजिक भौतिक व जैविक शिक्षण जयपुरए यूनिवर्सिटी बुक हाउस प्रा. लि.
- शर्मा एच. एस. (2007) पर्यावरण शिक्षा शिक्षण ,आगरा ,राधा प्रकाशन मंदिर
- सिंह विमेश के (2005) पर्यावरण अध्ययन जगदम्बा पब्लिशिंग